✓ व्याकरणशिक्षणविधयः

अधिक उन्नत PDF एवं समर्पित कोर्स के लिए –

SKY EDUCARE ऐप डाउनलोड करें / Download Mobile App

Download

उद्देश्यम् – भाषाज्ञानम्
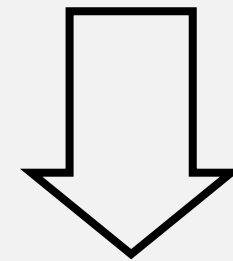
- **व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य- भाषा ज्ञान**

✓ संस्कृत भाषा को शुद्ध रूप में जानने के लिए व्याकरण शास्त्र का अधययन किया जाता है।

✓ छात्रों को शुद्ध भाषा के प्रयोग सीखना।

✓ व्याकरण के द्वारा छात्रों में रचना तथा सर्जनात्मकता।

✓ छात्रों को ध्वनियों, ध्वनियों के सूक्ष्म अन्तर शब्द योजना, शब्द शक्तियों एवं शुद्ध वर्तनी का ज्ञान कराना।

✓ छात्रों को वाक्य रचना के नियम, विराम चिन्हों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना।

व्याकरण शिक्षण विधियाँ

➤ प्राचीन विधि

- ✓ सूत्र विधि
- ✓ परायण विधि
- ✓ व्याकरणानुवादविधि(भंडारकर विधि)
- ✓ अव्याकृत विधि/भाषा संसर्ग विधि
- ✓ आगमन विधि
- ✓ निगमन विधि
- ✓ व्याख्या विधि

➤ आधुनिक विधि

- ✓ आगमन निगमन विधि
- ✓ पाठ्यपुस्तक विधि
- ✓ अनौपचारिक विधि
- ✓ समवाय विधि
- ✓ संरचनाविधि

प्राचीन विधि

सूत्र विधि

- ✓ परंपरागत विधि । पांडित्य विधि
- ✓ इसके द्वारा नियमों को सूत्ररूप में कंठस्थीकरण किया जाता था।
- ✓ सामान्य से विशिष्ट की ओर (सामन्याद् विशेषं प्रति) ।
- ✓ जटिल विषयों को समझने में याद रखने में सुविधा होती थी।
- ✓ उद्देश्य **"गागर में सागर"** (घटे समुद्रपूरणम्)भरना था।

प्राचीन विधि

परायण विधि

- ✓ पाणिनि के समय प्रचलित।
- ✓ परायण करने वाला (पारायणिक)।
- ✓ परायण में नियमों को रटना तथा उनकी बार-बार आवृत्ति करना।
- ✓ परायण के बीच में, अन्य विषयक वार्ता नहीं हो सकती थी।

प्राचीन विधि

व्याकरण अनुवाद विधि-

(भंडारकर विधि)

- प्रवर्तक श्री रामकृष्ण गोपाल भंडारकर थे
- इस विधि के द्वारा सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण पाठ की उदाहरण सहित व्याख्या की जाती है, उस व्याकरण नियम का पर्याप्त अभ्यास कराया जाता है
- संस्कृत से अंग्रेजी में अंग्रेजी से संस्कृत अनुवाद पर बल दिया जाता है
- अभ्यास के लिए नवीन शब्द बताया जाते हैं
- भंडारकर की पुस्तकें –

मार्गोपदेशिका , संस्कृतमन्दिरांत: प्रवेशिका ।

अव्याकृत विधि

- ✓ अव्याकृत विधि /भाषा संसर्ग विधि
- ✓ भाषा के साथ-साथ व्याकरण का भी ज्ञान दिया जाता है।
- ✓ इस विधि में अभ्यास पर बल दिया जाता है।

प्राचीन विधि

आगमन विधि

- ✓ उदाहरण से नियम की ओर (उदाहरणाद् नियमं प्रति)
- ✓ ज्ञात से अज्ञात की ओर (ज्ञाताद् अज्ञातं प्रति)
- ✓ विशिष्ट से सामान्य की ओर (विशिष्टात् सामान्यं प्रति)
- ✓ प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर (प्रत्यक्षात् प्रमाणं प्रति)
- ✓ स्थूल से सूक्ष्म की ओर (स्थूलात् शूक्ष्मं प्रति)
- ✓ मूर्त से अमूर्त की ओर (मूर्ताद् अमूर्तं प्रति)

शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाता हैं।

यह विधि सरल एवं स्वाभाविक है बार-बार प्रयोग के कारण कंठस्थीकरण आवश्यकता नहीं होती यह विधि आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के अनुकूल है अतः इसे व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि कहा जाता है इस विधि से छात्रों में उत्साह जागृत होता है तथा वह सक्रिय होते हैं।

प्राचीन विधि

निगमन विधि :

- ✓ इस विधि में शिक्षक पहले सामान्य नियमों व सिद्धांतों को बताता है फिर उदाहरण देता है
- ✓ इस विधि में समय और परिश्रम कम लगता है(उच्च कक्षाओं के लिए यह श्रेष्ठ विधि है)

प्राचीन विधि

निगमन विधि :

- ✓ निगमन विधि के चार सोपान हैं –
- ✓ १. नियम बोधन २.नियम स्पष्टीकरण ३.नियम परीक्षण एवं ४.सत्यापन

प्राचीन विधि

निगमन विधि :

- निगमन विधि के शिक्षण सूत्र :
  - नियम से उदाहरण की ओर
  - सामान्य से विशिष्ट की ओर
  - प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर
  - सूक्ष्म से स्थूल की ओर
  - अमूर्त से मूर्त की ओर
  - अज्ञात से ज्ञात की ओर

प्राचीन विधि

व्याख्या विधि

- ✓ पतंजलि ने इसी विधि का अनुकरण किया है
- ✓ *व्याख्यान के 6 अंग*

पदच्छेदः पदार्थोक्तिः विग्रहो वाक्ययोजना।
आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम् ॥

- ✓ इसमें भाषा की प्रायोगिक पक्ष की बजाय व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।
- ✓ यह विधि आधुनिक निगमनात्मक विधि के समकक्ष है।

आगमन निगमन विधि

(श्रेष्ठ विधि)

- दो विधियों "आगमन एवं निगमन का मिश्रण"
- उदाहरण से नियम तथा नियम से उदाहरण की ओर
- ज्ञान स्थाई व रोचक होगा
- व्याकरण शिक्षण की श्रेष्ठ विधि

अनौपचारिक विधि

- व्याकरण का कोई औपचारिक अध्यापन नहीं ।
- संभाषण में ही व्याकरण का ज्ञान होता है ।
- संस्कृत संभाषण शिविर में अनौपचारिक विधि से ही व्याकरण का ज्ञान होता है ।

पाठ्यपुस्तकविधि

- समर्थक : डॉ. वेस्ट महोदय । प्रचलन : अंग्रेजों के आगमन के साथ ही हुआ था ।
- इसमें कक्षा के स्तरानुसार विषय वस्तु को वर्गीकृत किया जाता है।
- भाषा शिक्षण की लोकप्रिय विधि पाठ्यपुस्तक विधि है।
- व्याकरण का ज्ञान प्रसंग आने पर ही दिया जायेगा।
- परीक्षा व अभ्यास कार्य का आधार पाठ्यपुस्तक ही है। शिक्षण का केंद्र पाठ्यपुस्तक को माना गया है।
- इन पाठ्य पुस्तकों का उद्देश्य कि इन्हें पढ़कर छात्र शिक्षक की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

समवाय विधि

- यहां पर भी व्याकरण का नियमित अध्ययन नहीं होता
- प्रसंग आने पर उस विषय में व्याकरण संबंधी ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है
- शिक्षक पाठ के दौरान ही व्याकरण के नियमों को यथास्थान बताता रहता है ।

संरचनाविधि

- वाक्यस्वरूप या वाक्य की सरंचना पर बल देकर शिक्षण करवाया जाता है।
- वाक्य रचना के दौरान व्याकरणात्मक ज्ञान दिया जाता है साथ ही शब्दकोष का ज्ञान भी करवाया जाता है ।
- जैसे- कर्ता, कर्म, अव्यय, उपसर्ग, निपात आदि का ज्ञान करवाना।
- इस विधि का प्रयोग प्रत्यक्ष विधि को सफल बनाने के लिए होता है।

व्याकरण पाठ योजना

1. प्रस्तावना
2. उद्देश्य कथन
3. प्रस्तुतिकरण
4. सामान्यीकारण
5. नियमीकरण
6. पुनरावृति
7. गृह कार्य